IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13742

आचार्य विनोबा भावे का सामाजिक चिन्तन: एक दार्शनिक अध्ययन

डॉ. शोभा आर. मिश्र[1], लोकेश टोपे[2]

निर्देशक, विभागाध्यक्ष -दर्शनशास्त्र विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)[1]

शोधार्थी, दर्शनशास्त्र विभाग, प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)[2]

सारांश: सर्वोदय की सामाजिक व्यवस्था की भी आलोचना की गई है। मुख्य आलोचना समाज में जाति-व्यवस्था को स्वीकार करने के कारण उत्पन्न होती है। तथापि, इस व्यवस्था में जाति को व्यवसाय के आधार पर स्वीकार किया गया है। गांधी के अनुसार, यह व्यक्ति के वंशानुगत पारिवारिक कर्तव्य से उत्पन्न एक वैध आजीविका का प्रतिनिधित्व करती है। जातियों के बीच कोई ऊँच-नीच या भेदभाव नहीं किया जाता; इसके विपरीत, समानता की भावना को बढ़ावा दिया जाता है। इसलिए विनोबा जी ने शिक्षित और अशिक्षित, सामान्य नागरिक, शासक, व्यापारी तथा बुद्धिजीवीकृसभी के लिए स्वैच्छिक श्रम सेवा को आवश्यक घोषित किया। इससे राष्ट्र की श्रमशक्ति का उपयोग जनकल्याण के लिए सुनिश्चित होता है और साथ ही अनेक अन्य महत्वपूर्ण लाभ भी प्राप्त होते हैं। संत विनोबा का विश्वास था कि समाज में श्रम और विचारकृदोनों को समान सम्मान मिलना चाहिए। इससे मालिक और मज़दूर का भेद समाप्त हो जाएगा। इससे मातृत्व और स्नेह की भावनाएँ विकसित होंगी तथा ऊँच-नीच का भेद मिट जाएगा। इसी आधार पर सामाजिक समरसता की भावना स्थापित होनी चाहिए। अमीर और गरीब, छोटे और बड़े, शिक्षित और अशिक्षित, सरकारी और गैर-सरकारी कर्मचारी, तथा पुरुष और महिलाकृइन सबके बीच के भेद समाप्त हो जाएँगे। साथ ही राष्ट्रकार्य के लिए प्रचुर श्रमशक्ति भी उपलब्ध होगी। इसका मूल सिद्धांत यह है कि धन समाज के सहयोग से अर्जित होता है; इसलिए उसका उपयोग भी समाज-सेवा के लिए होना चाहिए। अपने एक प्रस्ताव में सर्व सेवा संघ ने कहा कि संपत्ति दान के पीछे का सिद्धांत यह है कि उत्पादन के साधन समाज और ग्राम समुदाय के हाथों में बने रहने चाहिए। सामाजिक जीवन को सरल, सामंजस्यपूर्ण और सुखी बनाने के लिए विनोबा जी ने कहा कि प्रत्येक सक्षम व्यक्ति, चाहे वह सामान्य नागरिक हो, शासक वर्ग का सदस्य हो, बुज़ुर्ग हो, व्यापारी हो, शिक्षक हो या सैनिककृउसे प्रतिदिन उत्पादक श्रम करना चाहिए। इसी संदर्भ में उन्होंने श्रमदान आंदोलन प्रारंभ किया और लोगों से अपील की कि वे अपने श्रम का एक भाग लोक-सेवा के लिए समर्पित करें। इसके बिना न तो भूदान यज्ञ (सर्वोदय आंदोलन) सफल होगा, न ही गरीबों का उत्थान, अमीर-गरीब की असमानता का अंत, या सर्वोदय समाज की स्थापना संभव होगी। उन्होंने आगे कहा कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन कम-से-कम एक घंटे का स्वैच्छिक श्रम अवश्य करे। आज देश को उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता है। अनेक नेता कहते हैं, उत्पादन बढ़ाओ, उत्पादन बढ़ाओ, पर क्या उत्पादन बढ़ाना केवल कृषि मज़दूरों से आठ घंटे के स्थान पर नौ घंटे काम करवाने का विषय है? वर्तमान में लाखों एकड़ भूमि बंजर पड़ी है। उसे खोदकर खेती योग्य बनाया जाना चाहिए। हज़ारों गाँवों में सड़कें बनाई जानी चाहिए। यात्रियों के लिए गाँवों में चौपालें तैयार की जानी चाहिए। कचरे से उचित ढंग से खाद बनाई जानी चाहिए। ढके हुए और स्वच्छ शौचालय बनाए जाने चाहिए। पत्तियाँ व्यर्थ जा रही हैं। उनके उपयोग के लिए विभिन्न स्थानों पर सैकड़ों खाद के गड्ढे खोदे जाने चाहिए। गाँवों में विद्यालयों के लिए सैकड़ों छोटी झोपड़ियाँ बनाई जानी चाहिए। छोटी नदियों का पानी व्यर्थ बह रहा है, उसे संरक्षित करने के लिए छोटे बाँध बनाए जाने चाहिए। विभिन्न स्थानों पर सिंचाई की नहरें खोदी जानी चाहिए। हज़ारों खेतों में भूमि समेकन की आवश्यकता है। विभिन्न स्थानों पर उपयोगी वृक्ष लगाए जाने चाहिए। अलग-अलग क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान चलाए जाने चाहिए। दलदली क्षेत्रों में छोटी जल-निकासी नालियाँ बनाई जानी चाहिए। क्या सरकार अकेले यह सब कर सकती है?

मुख्य शब्द: संपत्ति दान, समाज, ग्राम समुदाय, शासक, उत्थान, असमानता आदि।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र मंे आचार्य विनोबा भावे का सामाजिक चिन्तन: एक दार्शनिक अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीय शोध सामाग्री के आधार पर अध्ययन किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के रूप में साक्षात्कार, विद्वानों का मार्गदर्शन एवं द्वितीयक स्रोत के रूप में पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अध्ययन किया गया है।

समस्या

उस समय की तत्कालीन स्थिति अंग्रेजी सत्ता के कारण देश गुलामी के संकट से जूझ रहा था। ऐसी दशा में भारतीय समाज अराजकता और गुलामी पूर्ण जीवन जीने के लिए मजबूर था। आचार्य विनोबा जी की श्रम सेवा का अंतिम उद्देश्य समाज में समानता, दक्षता, समृद्धि,

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13742

स्वच्छता, पवित्रता, प्रेम, भक्ति और समरसता की स्थापना करना था। यह श्रम को गरिमा प्रदान करने का एक व्यावहारिक और सार्थक माध्यम है। यह आंदोलन सिद्ध करता है कि श्रम-केंद्रित जीवन ही वास्तविक जीवन है और उसके सफल क्रियान्वयन का आह्वान किया गया था।

उद्देश्य

- आचार्य विनोबा भावे के अहिंसा सिद्धान्त का अध्ययन करना।
- आचार्य विनोबा भावे के प्रत्येक दृष्टि से सामाजिक समानता का अध्ययन करना।
- सामाजिक परिदृश्य में सादा जीवन के महत्व का अध्ययन करना।
- आचार्य के चिन्तन में त्याग और शारीरिक श्रम के महत्व का रेखांकित करना।
- भारतीय समाज में सामाजिक विकेंद्रीकरण की आवश्यकता को रेखांकित करना।
- आत्मनिर्भरता और सहयोग का अध्ययन करना।

समाधान

आचार्य विनोबा ने आध्यात्मिक नगरी काशी में स्वच्छ काशी आंदोलन के माध्यम से आदर्श श्रम सेवा का उदाहरण प्रस्तुत किया और यह सिद्ध किया कि पवित्र काशी स्वयं भी स्वच्छ रहनी चाहिए। विनोबा जी से प्रेरित होकर सेनापति बापट, गोडसे बाबा और तुकडोजी महाराज ने महाराष्ट्र में विभिन्न प्रकार की स्वैच्छिक श्रम सेवाओं का आयोजन और संचालन किया। आज भी देशभर में लोग सार्वजनिक स्थलों और ऐतिहासिक स्मारकों के संरक्षण हेतु श्रमदान करते हैं। विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों, बुद्धिजीवियों, युवाओं, राजनेताओं तथा सामान्य नागरिकों ने स्वैच्छिक श्रम के माध्यम से प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण और पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संत विनोबा भावे ने बोधगया में आयोजित सर्वोदय सम्मेलन में एक महान योगदान प्रस्तुत किया, जो मानवता को प्राप्त सबसे बड़े नैतिक उपहारों में से एक था। हालांकि, विनोबा जी ने इस महान विचार का संकेत कुछ महीने पहले ही एक प्रार्थना-प्रवचन में दे दिया था। उन्होंने कहा कि वर्तमान समाज में नया मनुष्य ही नए समाज का निर्माण करता है। इस उद्देश्य से भूदान, संपत्ति दान और श्रमदान जैसी गतिविधियाँ पहले ही प्रारंभ हो चुकी थीं। लेकिन इस कार्य के लिए मनुष्य के मन में ऐसी सोच उत्पन्न होनी चाहिए जो जीवनदान की भावना को जागृत करे। अपने जीवन को समर्पित करने की तत्परता अनिवार्य है।

संत विनोबा भावे ने इस बात पर बल दिया कि स्वतंत्र लोकशक्ति का निर्माण अत्यंत आवश्यक है। हमें हिंसा की शक्ति का पूर्णतः विरोध करना चाहिए। कानून की दंडात्मक शक्ति से अलग स्वतंत्र लोकशक्ति का प्रकट होना आवश्यक है। इसी आधार पर विनोबा जी ने जीवनदान की दृष्टि से सर्वोदय, अहिंसक समाज और भूदान आंदोलन की अवधारणाओं को सार्थक रूप दिया। इस पवित्र उपासना-प्रक्रिया में मनुष्य को समस्त जीवन और शक्ति के प्रति जागरूक होना चाहिए। इसी आधार पर हम अहिंसक समाज के पुनर्निर्माण की एक नवीन क्रांति को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं। स्वराज अपने वास्तविक अथवा मूल अर्थ में सर्वोदय के आध्यात्मिक माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचना चाहिए। जो समाज इन आदर्शों का अनुसरण और पालन करता है, वह अंततः एक आदर्श और अहिंसक समाज में परिवर्तित हो जाता है। सर्वोदय का उद्देश्य एक ऐसा समाज बनाना है जो पवित्र, समृद्ध, प्रगतिशील, कुशल और सक्षम हो। ऐसे समाज की नींव रखने के लिए विनोबा भावे ने निम्नलिखित सिद्धांतों पर विशेष बल दियासर्वोदय का दर्शन ऐसे समाज की कल्पना करता है जिसमें लोग परस्पर भाईचारे और सामुदायिक भावना के साथ छोटे-छोटे संगठित समुदायों में रहें तथा ये गाँव आर्थिक और राजनीतिक रूप से आत्मनिर्भर बनें। जब ये सभी तत्व सफलतापूर्वक कार्य करेंगे, तभी वर्गविहीन और शोषण-मुक्त समाज का निर्माण होगा। वर्गविहीनता का अर्थ है समानता। ऐसे समाज में आर्थिक स्थिति, धर्म, जाति या क्षेत्र के आधार पर कोई असमानता या भेदभाव नहीं होगा। चूँकि सर्वोदय अहिंसक सामाजिक व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध है, इसलिए उत्पादन, बाज़ार या रोजगार में किसी प्रकार का शोषण नहीं होगा। समाज की विशेषताएँ परस्पर मैत्री, प्रेम, सहयोग, सत्यनिष्ठा और अहिंसा होंगी। सर्वोदय का सर्वोच्च आदर्श यह है कि मानवता के कल्याण के लिए हमें परिवार, संबंध, गाँव, धर्म और राष्ट्र की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर अपनी सोच का विस्तार करना चाहिए, ताकि प्रत्येक व्यक्ति सबके उत्थान से जुड़ सके। सर्वोदय समाज की अवधारणा एकता के विचार पर आधारित है। इसके अनुसार पूरे समाज को एक शरीर के रूप में देखा जाना चाहिए। समस्त समाज में प्रेम पर आधारित पारिवारिक भावना होनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्तिकृचाहे राजा हो या किसान, हिंदू हो या मुसलमान, श्वेत हो या अश्वेत, संत हो या पापीकृसभी को समान स्थान मिलेगा। किसी व्यक्ति या समुदाय को दबाने या उसका शोषण करने का कोई उद्देश्य नहीं होगा। इस सामाजिक व्यवस्था में सभी समान रूप से भाग लेंगे, अपने श्रम का उपयोग करेंगे और शक्तिशाली लोग निर्बलों की रक्षा और सहायता करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति सबके कल्याण के लिए कार्य करेगा।

महात्मा गांधी ने आदर्श समाज को रामराज्य कहा। इसके स्वरूप को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि रामराज्य का अर्थ है ऐसा राज्य जो शोषण से मुक्त हो, जहाँ गरीब और कमजोर लोगों को समृद्धि की कीमत न चुकानी पड़े, और जहाँ गाँवों की गरीबी पर शहरों का निर्माण न हो। कुटीर एवं ग्राम उद्योगों को महत्व दिया जाना चाहिए। संपत्ति के निजी स्वामित्व को समाप्त कर देना चाहिए क्योंकि यह

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13742

समाज में अत्यधिक असमानता उत्पन्न करता है। निजी संपत्ति का सार्वजनिक संपत्ति के रूप में प्रबंधन समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन और कल्याण लाता है।

सर्वोदय के विचार केवल भारत तक सीमित नहीं हैं; उनका स्पष्ट और निश्चित राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण है। विनोबा ने ष्जय हिंदष् के स्थान पर जय जगत् का नारा दिया। राष्ट्रों के बीच घृणा का अंत होना चाहिए। जब सर्वोदय के सिद्धांत राष्ट्रीय स्तर पर लागू होंगे, तब राजनीति की भूमिका भी बदलनी चाहिए। जातिगत भेदभाव समाप्त होना चाहिए और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) का सिद्धांत मार्गदर्शक आदर्श बनना चाहिए। यदि इस नीति को लागू किया जाए, तो विकासशील देश धीरे-धीरे विकास के मार्ग पर अग्रसर होंगे। इन विचारों का अनुसरण और व्यवहार में पालन करके अहिंसा पर आधारित समाज की स्थापना की जा सकती है। सर्वोदय का उद्देश्य एक ऐसा समाज बनाना है जो पवित्र, समृद्ध, कुशल और सक्षम हो। संक्षेप में, सर्वोदय समाज की नींव रखने के लिए विनोबा द्वारा दिए गए मुख्य सिद्धांत निम्नलिखित हैं। संपत्ति के निजी स्वामित्व को समाप्त कर देना चाहिए क्योंकि यह समाज में गंभीर असमानता उत्पन्न करता है। निजी संपत्ति का सार्वजनिक संपत्ति के रूप में प्रबंधन महत्वपूर्ण परिवर्तन और कल्याण लाता है। आर्थिक समानता सर्वोदय समाज के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। यदि समाज आर्थिक असमानता से ग्रस्त हो और धनी लोग अपने लाभ के लिए गरीबों का शोषण करें, तो ऐसी असमानता अन्याय और उत्पीड़न को जन्म देती है। आर्थिक समानता का सार यह है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास समान संपत्ति हो, अर्थात प्रत्येक व्यक्ति के पास अपनी प्राकृतिक (मूलभूत) आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त संपत्ति हो। दूसरे शब्दों में, प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकताओं के अनुसार संसाधनों तक पहुँच प्राप्त होनी चाहिए। आर्थिक समानता का अर्थ समाज की समस्त भौतिक संपत्ति का समान वितरण नहीं है। बल्कि इसका अर्थ यह है कि जो व्यक्ति समाज के कल्याण के लिए अपनी पूरी क्षमता से कार्य करता है, उसे उसकी आवश्यकताओं के अनुसार संपत्ति प्राप्त हो। सर्वोदय प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकताओं के अनुसार संसाधन उपलब्ध कराने का समर्थन करता है। सर्वोदय समाज के निर्माण में धार्मिक सद्भाव को अत्यधिक महत्व दिया गया। धर्म के नाम पर विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच शत्रुता और कटुता अहिंसक समाज की स्थापना के लिए हानिकारक है। सर्वोदय धार्मिक सद्भाव के आदर्श का समर्थन करता है। विनोबा जी के अनुसार, हमारी संस्कृति सदैव समन्वयवादी रही है। हिंदू धर्म को इस्लाम, ईसाई धर्म तथा अन्य धर्मों के साथ समन्वय स्थापित करना चाहिए और यह समन्वय केवल विचारों तक सीमित न रहकर जीवन में भी दिखाई देना चाहिए। उन्होंने इस धारणा को अस्वीकार किया कि भारतीय समाज धर्म के आधार पर विभाजित है। मानव धर्म की स्थापना के लिए विभिन्न आस्थाओं के आदर्शों का समन्वय आवश्यक है। धर्म से सेवा की भावना, धर्म के प्रति लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, जैन धर्म से अनुशासन और उपनिषदों में निहित ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का बोधकृये सभी समन्वय के विषय हैं। केवल अंतरधार्मिक सद्भाव के माध्यम से ही समाज में सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान का सिद्धांत विकसित हो सकता है, जिससे सत्य, प्रेम, करुणा और सेवा पर आधारित वास्तविक मानव धर्म की स्थापना संभव होगी। गांधी ने भी धार्मिक विविधता के भीतर एकता का अनुभव किया और अन्य धर्मों के गुणों का अपने धर्म के साथ समन्वय करने का प्रयास किया।

इस प्रकार, परस्पर सहिष्णुता और सम्मान के माध्यम से विभिन्न धर्मों की आंतरिक एकता को सुदृढ़ किया जा सकता है, जिससे स्वयं धर्म का भी परिष्कार होता है। धार्मिक कट्टरता को दूर करने से धार्मिक समन्वय का उदय होता है। गांधी का विश्वास था कि धर्मों की मूलभूत एकता का बोध मानवता के विकास को सही दिशा प्रदान करेगा। इस प्रकार, सर्वोदय वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की असमानताओं को समाप्त करके एक सुंदर, स्वस्थ और आदर्श समाज का निर्माण करना चाहता है। ऐसे समाज में प्रत्येक व्यक्ति को रोजगार मिलेगा। सभी को अपनी प्रतिभा विकसित करने के अवसर उपलब्ध होंगे। नियोक्ताओं, श्रमिकों, मज़दूरों और बुद्धिजीवियों के बीच कोई भेदभाव नहीं होगा। कोई भूखा नहीं रहेगा और न ही कोई दूसरों की कीमत पर विलासिता का जीवन जीएगा। शोषण समाप्त होगा। गरीबी और बेरोज़गारी समाप्त हो जाएगी। सभी व्यवसाय बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए समान रूप से खुले होंगे। यह सामाजिक व्यवस्था वर्गविहीन, शोषण-मुक्त, समावेशी और विकेंद्रीकृत होगी।

निष्कर्ष

सर्वोदय का अर्थ है सार्वभौमिक प्रेम पर आधारित एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था। इसलिए निस्संदेह इसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्थान है। चाहे वह राजा हो या गरीब, हिंदू हो या मुसलमान, अस्पृश्य हो या उच्च जाति का, काला हो या गोरा, संत हो या पापी। किसी व्यक्ति या समूह पर अत्याचार नहीं होगा, उसका शोषण नहीं होगा और न ही उसे नष्ट किया जाएगा। इस व्यवस्था में सभी सदस्य समान होंगे। प्रत्येक व्यक्ति को अपने श्रम के फल में हिस्सा मिलेगा। शक्तिशाली लोग निर्बलों की रक्षा करेंगे और उनके संरक्षक बनेंगे, तथा प्रत्येक सदस्य सबके कल्याण का ध्यान रखेगा। सर्वोदय की सामाजिक व्यवस्था को प्रायः एक आदर्शवादी व्यवस्था माना जाता है और यह अभी तक पूर्ण रूप से व्यवहार में स्थापित नहीं हो सकी है। यह सत्य है कि यह एक आदर्श है, पर यह कहना गलत है कि ऐसे आदर्श पर समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता। शून्य का भी कोई भौतिक स्वरूप नहीं है; वह केवल एक विचार या अवधारणा है। फिर भी गणित और भौतिकी का निर्माण शून्य की अवधारणा पर हुआ है। यदि शून्य जैसी काल्पनिक अवधारणा गणित की आधारशिला बन सकती है, तो सर्वोदय का आदर्श वास्तविक सर्वोदय समाज के निर्माण का आधार क्यों नहीं बन सकता?

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

IARJSET ISSN (O) 2393-8021, ISSN (P) 2394-1588

International Advanced Research Journal in Science, Engineering and Technology

Impact Factor 8.066 ⁜ Peer-reviewed & Refereed journal ⁜ Vol. 13, Issue 7, July 2026

DOI: 10.17148/IARJSET.2026.13742

सन्दर्भ

[1]. विनोबा साहित्य, खंड 18, 'संयोगी समाज', पृष्ठ 102-103
[2]. विनोबा साहित्य, खंड 15, 'आरोहण', पृष्ठ 163
[3]. विनोबा भावे, 'संपत्तिदान', पृष्ठ 35
[4]. विनोबा साहित्य, खंड 15, 'तीसरी शक्ति', पृष्ठ 265
[5]. ए. एच. डॉक्टर, 'सर्वोदय एक राजनीतिक और आर्थिक अध्ययन', पृष्ठ 118-121
[6]. पाठक, डॉ. कृष्णकान्त, समाज एवं राजनीति दर्शन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2012, पृष्ठ 7
[7]. विनोबा साहित्य, खंड 18, 'संयोगी समाज', पृष्ठ 87
[8]. सुकुमारन, एन.पी. सर्वोदय दर्शन, पूर्णोदय बुक ट्रस्ट, गांधी भवन कोच्चि, 1997, पृष्ठ 22
[9]. रामाभाई, सुरेश, भूदान मूवमेंट बेसिस एंड अप्रोच, मद्रास सिटी भूदान कमेटी, 1955, पृष्ठ 26

© IARJSET This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License